

के बारे में मांग प्राप्त हुई है और यदि हां, तो इस बारे में क्या निर्णय किया गया है ; और

(ग) क्या उक्त रेलगाड़ी के आना-जाने के समय यात्रियों के लिये उपयुक्त नहीं है और यदि हां, तो इस रेलगाड़ी के समय को ठीक निश्चित करने के लिये रेलवे प्रशासन को क्या कठिनाई अनुभव हो रही है ?

रेलवे मंत्रालय में राज्य-मंत्री (डा० राम सुभग सिंह) : (क) 2.10.1966 से नं० 109 डाउन 110 अप बादा-कानपुर एक्सप्रेस गाड़ियों का आना-जाना लखनऊ तक बढ़ा दिया गया है।

(ख) इन एक्सप्रेस गाड़ियों को कठारा रोड, भीमसेन और सिरही इतारा स्टेशनों पर ठहराने की मांग को स्वीकार नहीं किया गया है क्योंकि ऐसा करने से गाड़ियों को अधिक जगह रुकना पड़ेगा और इन स्टेशनों के यातायात को देखते हुए ऐसा करने का औचित्य नहीं है। साथ ही, ऐसा करने से इन तेज गाड़ियों की यात्रा में लगने वाला समय बढ़ जायेगा और जिस उद्देश्य को लेकर ये गाड़ियाँ चलाई गयी हैं, वह पूरा नहीं होगा और उनके एक्सप्रेस गाड़ी कहलाने का कोई अर्थ नहीं रह जायेगा।

(ग) इन एक्सप्रेस गाड़ियों का आना-जाना लखनऊ तक बढ़ाने के अलावा, एक संसद् सदन द्वारा अन्य बातों के साथ-साथ जो मांग की गयी थी, उसके अनुसार इन गाड़ियों के समय में भी 2-10-1966 से सम्बन्धित संशोधन कर दिया गया है और कानपुर में यात्रियों के लिए अधिक उपयुक्त मेल की व्यवस्था की गयी है। इस बात का भी ध्यान रखा जा रहा है कि संशोधित समय उपयुक्त है या नहीं और इस सम्बन्ध में जो भी कार्रवाई व्यावहारिक और उचित होगी, की जायेगी।

आयातित वस्तुओं का सरकारी कार्यालयों द्वारा इस्तेमाल

2906. श्री म० ला० द्विवेदी :  
श्री सुबोध हुंत्वा :  
श्री भागवत झा आजाद :  
श्री स० चं० सामन्त :  
श्री प्र० चं० बरुआ :  
डा० म० मो० दास :

क्या सम्भरण, तकनीकी विकास तथा सामग्री आयोग मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि

(क) भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों तथा विभागों की विभिन्न प्रकार की मांगों को पूरा करने के लिये पिछले एक वर्ष में कितनी मात्रा में तथा कितने मुख्य का सामान तथा अन्य उपकरण आयात किये गये

(ख) क्या आयात किये गये उक्त सामान की सूची सभा-पटल पर रखी जाएगी;

(ग) उन मंत्रालयों तथा विभागों के नाम क्या हैं, जो केन्द्रीय सरकार की नीति के विपरीत देश में बनी हुई वस्तुओं की अपेक्षा विदेशी वस्तुओं की मन्पाई का आग्रह करते हैं ; और

(घ) जो सामान सरकारी क्षेत्र में बनाया जाता है, वैसे ही सामान को विदेशों से खरीदनेके क्या कारण हैं ?

सम्भरण, तकनीकी विकास तथा सामग्री आयोगका मंत्री (श्री के० रघुरामय्या) :  
(क) और (ख). सभा-पटल पर एक सूची रखी जाती है (पुस्तकालय में रखी गई। देखिए संख्या एल० टी० 7499/66/) 1965-66 में पूति और निपटान महा निदेशालय तथा संघन और बाजिगटन के भारत पूति मित्राने द्वारा आयातित वस्तुओं के लिए लिए गए आर्डरों का मुख्य वस्तुओं

के मुख्य वर्गों के आधार पर वर्गीकृत रूप में दिया गया है।

(ग) ऐसा कोई मामला ध्यान में नहीं आया है।

(घ) प्रश्न उत्पन्न नहीं होता।

#### Assurances for maintaining prices

2907. **Shri Madhu Limaye:**  
**Shri Kishan Pattanayak:**

Will the Minister of Commerce be pleased to refer to the reply given to Unstarred Question No. 1529 on the 5th August, 1966 and state:

(a) which of the manufacturers who gave an assurance to the Prime Minister "that they will maintain the prices of their products inspite of the devaluation" have not kept this assurance and have increased their prices;

(b) the position in respect of price-rise at present; and

(c) whether Government are satisfied that the consumers were freely getting these products on the 2nd July, 1966 at the prices mentioned in the reply to the question referred to above?

**The Minister of Commerce (Shri Manubhai Shah):** (a) As per assurances given, for about 2 months following devaluation, the manufacturers by and large, maintained the prices:

The important changes that have since taken place are as follows:

The Manufacturers of Vanaspati and toilet/washing soap and cotton textiles revised their prices upwardly with effect from 19th August, 1966, 8th September, 1966 and 1st October, 1966 respectively.

Vanaspati manufacturers however brought down the prices with effect from 1st October, 1966 which more or less neutralised the increase which took place from 15th August, 1966. Again from 1st November, 1966 a fur-

ther price reduction was made in November, 1966 by about 25 paise per Kg. in all the 4 zones—North, South, East and West.

Soap manufacturers have also reduced the prices from 15th November, 1966 by 20 paise per Kg. on toilet soap and 12 paise per Kg. on washing soap though this has not neutralised the recent price increase.

As regards cotton textiles Government agreed to the upward revision of prices by manufacturers on controlled categories of cloth to the extent of 6 per cent due to increased cost of production. It has, however, at the same time been decided to withdraw the excise duty on dhoties, sarees and other popular varieties to cushion the price increase so that prices to be paid by the consumer would go up by 3 to 5 per cent.

(b) A statement showing the wholesale prices of selected commodities for the country as a whole and retail prices of selected commodities in Delhi is laid on the Table of the House. [Placed in Library. See No. LT-7500/66].

(c) While there have been some reports of shortages in some of the commodities occasionally at certain places, these were generally available to the consumers at the prices referred to in the statement.

#### Neyveli Thermal Power Station

2908. **Shri Yashpal Singh:** Will the Minister of Mines and Metals be pleased to state:

(a) whether the Neyveli Thermal Power Station is going to be constructed according to the schedule; and

(b) if so, when the project would be completed?

**The Minister of Mines and Metals (Shri S. K. Dey):** (a) The Neyveli Thermal Power Station is already in operation. Presumably, the Hon'ble Member is referring to the third stage of its expansion. This is expected to be completed according to schedule.